ब्राह्मण जन्म - अवतरित जन्म

अव्यक्त मुरली 04.11.18 से टॉपिक्स

(रिवा. 24.2.84)

1. परमात्म पैगाम वाहक संगमयुगी दशरथ।

2. ब्राह्मण संसार के 10 महाअवतार।

3. बाप की अमानत से माया की ख़ातिरि करते चतुर सुजान।

4. अपरम्पार प्राप्ति की आधार उपराम स्थिति।

5. मेरे मेरे की डाली छोड़ उड़ते कर्मातीत हमजिन्स।

6. परमात्मा पांव के ऊपर पांव रखते गॉडली फ्रेंड्स।

7. डायरेक्शन के रिफ्यूज से बढ़ती कंफ्यूज ब्राह्मण लाइफ।

अव्यक्त मुरली 04.11.18 से प्रश्नोत्तर

प्रश्न:-बापदादा आवाज़ में क्यों आते?
उत्तर:- सभी को आवाज़ से परे की स्थिति में ले जाने के लिए।

प्रश्न:-व्यक्त देश में व्यक्त शरीर में क्यों प्रवेश होते हैं?
उत्तर:-अव्यक्त बनाने के लिए।

👉 सदा अपने को अव्यक्त स्थिति वाले सूक्ष्म फरिश्ता समझ व्यक्त देह में अवतरित होते हो?

प्रश्न:-सभी अवतरित होने वाले कौन हो?
उत्तर:- अवतार हो। इसी स्मृति में सदा हर कर्म करते, कर्म के बन्धनों से मुक्त कर्मातीत अवतार हो।

प्रश्न:-अवतार अर्थात् क्या?
उत्तर:-ऊपर से श्रेष्ठ कर्म के लिए नीचे आते हैं।

प्रश्न:-आप सभी भी ऊँची ऊपर की स्थिति से नीचे अर्थात् क्या?
उत्तर:-देह का आधार ले सेवा के प्रति कर्म करने के लिए पुरानी देह में, पुरानी दुनिया में आते हो।

प्रश्न:-लेकिन स्थिति ऊपर की रहती है, इसलिए क्या हो?
उत्तर:-अवतार हो।

प्रश्न:-अवतार अवतरित क्यों होते हैं?
उत्तर:-अवतार सदा परमात्म पैगाम ले आते हैं।

प्रश्न:-आप सभी संगमयुगी श्रेष्ठ आत्मायें भी किसलिए अवतरित हुए हो?
उत्तर:- परमात्म पैगाम देने के लिए,
परमात्म मिलन कराने के लिए अवतरित हुए हो।

प्रश्न:-यह देह अब किसकी नहीं है?
उत्तर:-अब आपकी देह नहीं रही। देह भी बाप को दे दी।

प्रश्न:-सब तेरा कहा अर्थात् क्या?
उत्तर:-मेरा कुछ नहीं।

प्रश्न:-इस देह को बाप ने क्यों और कैसे दी है?
उत्तर:-सेवा के अर्थ बाप ने लोन में दी है।

प्रश्न:-लोन में मिली हुई वस्तु पर क्या नही हो सकता?
उत्तर:- मेरे-पन का अधिकार हो नहीं सकता।

प्रश्न:-जब मेरी देह नहीं तो क्या नही आ सकता?
उत्तर:-देह का भान कैसे आ सकता! आत्मा भी बाप की बन गई। देह भी बाप की हो गई तो मैं और मेरा कहाँ से आया!

प्रश्न:-मैं-पन सिर्फ किसका रहा?
उत्तर:-एक बेहद का रहा। मैं बाप का हूँ। जैसा बाप वैसा मैं मास्टर हूँ। तो यह बेहद का मैं-पन रहा।

प्रश्न:-हद का मैं-पन किसमें लाता है?
उत्तर:-विघ्नों में लाता है।

प्रश्न:-बेहद का मैं-पन क्या बनाता है?
उत्तर:-निर्विघ्न, विघ्न विनाशक बनाता है।

प्रश्न:- ऐसे ही हद का मेरा पन किसमें लाता है?
उत्तर:- मेरे-मेरे के फेरे में लाता है।

प्रश्न:- बेहद का मेरा-पन किससे छुड़ाता है?
उत्तर:-जन्मों के फेरों से छुड़ाता है।

प्रश्न:-बेहद का मेरा-पन क्या है?
उत्तर :-"मेरा बाबा"। तो हद छूट गई ना।

प्रश्न:-सेवा के कर्म में कैसे आओ?
उत्तर:-अवतार बन देह का आधार ले सेवा के कर्म में आओ।

प्रश्न:-बाप ने लोन अर्थात् अमानत किसलिए दी है?
उत्तर:-सेवा के लिए। और कोई व्यर्थ कार्य में लगा नहीं सकते। नहीं तो अमानत में खयानत का खाता बन जाता है।

प्रश्न:-अवतार कौन-सा खाता नहीं बनाता?
उत्तर:-अवतार व्यर्थ खाता नहीं बनाता। आया, सन्देश दिया और गया।

प्रश्न:-आप सभी ब्राह्मण जन्म में क्यों आये हो?
उत्तर:-सेवा-अर्थ सन्देश देने अर्थ ब्राह्मण जन्म में आये हो।

प्रश्न:-ब्राह्मण जन्म कैसा जन्म है?
उत्तर:-ब्राह्मण जन्म अवतरित जन्म है। साधारण जन्म नहीं।

प्रश्न:-सदा कौन-से निश्चय और नशे में रहो?
उत्तर:-सदा अपने को अवतरित हुई विश्व-कल्याणकारी,सदा श्रेष्ठ अवतरित आत्मा हैं - इसी निश्चय और नशे में रहो।

प्रश्न:-कौन-सी स्मृति उपराम और अपरमअपार प्राप्ति की अनुभूति कराने वाली है?
उत्तर:-टैम्प्रेरी समय के लिए आये हो और फिर जाना भी है। अब जाना है यह सदा याद रहता है? अवतार हैं, आये हैं, अब जाना है।
☝ यही स्मृति उपराम और अपरमअपार प्राप्ति की अनुभूति कराने वाली है।

प्रश्न:-एक तरफ उपराम दूसरे तरफ क्या?
उत्तर:- अपरमअपार प्राप्ति। दोनों अनुभव साथ-साथ रहते हैं। ऐसे अनुभवीमूर्त्त हो ना। अच्छा –

प्रश्न:-अब सुनने को किसमें लाना है? और सुनना अर्थात क्या?
उत्तर:-स्वरूप में लाना है। सुनना अर्थात् बनना।

प्रश्न:-आज बापदादा किससे मिलने आये हैं?
उत्तर:-
📍आज विशेष हमजिन्स से मिलने आये हैं।
📍हमशरीक हो गये ना।
📍सत शिक्षक निमित्त शिक्षकों से मिलने आये हैं।
📍सेवा के साथियों से मिलने आये हैं। अच्छा-

🙏 **याद प्यार** 🙏
सदा बेहद के मैं-पन के स्मृति स्वरूप, सदा बेहद का मेरा बाप इसी समर्थ स्वरूप में स्थित रहने वाले, सदा ऊँची स्थिति में स्थित रह देह का आधार ले अवतरित होने वाले अवतार बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।"

टीचर्स के साथ:-

प्रश्न:-यह संगठन किसका है?
उत्तर:-सदा सेवाधारी आत्माओं का यह संगठन है।

👉 सदा अपने को बेहद के विश्व सेवाधारी समझते हो?
❓ हद के सेवाधारी तो नहीं हो ना। सब बेहद के हो?
❓ किसी को भी किसी स्थान से किसी भी स्थान पर भेज दें तो तैयार हो?
❓ सभी उड़ते पंछी हो?

❓ अपने देह के भान की डाली से भी उड़ते पंछी हो या देह के भान की डाली कभी-कभी अपने तरफ खींचती है?

प्रश्न:-सबसे ज्यादा अपने तरफ आकर्षित करने वाले डाली कौन-सी है?
उत्तर:-यह देह का भान है। जरा भी पुराने संस्कार, स्वभाव अपने तरफ आकर्षित करते माना देह का भान है।

प्रश्न:-देहभान की निशानी क्या है? और कर्मातीत स्थिति किसे कहते हैं?
उत्तर:-मेरा स्वभाव ऐसा है, मेरा संस्कार ऐसा है, मेरी रहन-सहन ऐसी है, मेरी आदत ऐसी है, यह सब देह भान की निशानी है।

👉 तो इस डाली से उड़ते पंछी हो?इसको ही कहा जाता है - कर्मातीत स्थिति। कोई भी बन्धन नहीं।

प्रश्न:-कर्मातीत का अर्थ क्या नहीं है?
उत्तर:- कर्मातीत का अर्थ यह नही कर्म से अतीत हो लेकिन कर्म के बन्धन से न्यारे।

प्रश्न:-तो देह के कर्म, जैसे किसका नेचर होता है कौन-सा?
उत्तर:-आराम से रहना, आराम से समय पर खाना, चलना यह भी कर्म का बन्धन अपने तरफ खींचता है।

प्रश्न:-इस कर्म के बन्धन अर्थात् आदत से भी परे। क्यों?
उत्तर:-क्योंकि निमित्त हो ना।

प्रश्न:-जब आप सभी निमित्त आत्मायें कर्म के बन्धनों से देह के संस्कार - स्वभाव से न्यारे नहीं होंगे तो क्या होगा?
उत्तर:- तो औरों को कैसे करेंगे!

प्रश्न:-जैसे शरीर की बीमारी कर्म का भाग है, इसी रीति से अगर कोई भी कर्म का बन्धन अपने तरफ खींचता है तो वह क्या करता है?
उत्तर:-यह भी कर्म का भोग विघ्न डालता है।

प्रश्न:-जैसे शारीरिक व्याधि कर्म भोग अपनी तरफ बार-बार खींचता है, दर्द होता है तो खींचता है ना। तो क्या कहते हो?
उत्तर:- क्या करें, वैसे तो ठीक है लेकिन कर्मभोग कड़ा है।

प्रश्न:- कोई भी विशेष पुराना संस्कार वा स्वभाव वा आदत अपने तरफ खींचती है तो वह भी क्या हुआ?
उत्तर:-वह भी कर्म भोग हो गया।

प्रश्न:-कोई भी कर्मभोग क्या नही बना सकेगा?
उत्तर:- कर्मयोगी बना नहीं सकेगा। तो इससे भी पार। क्यों? सभी नम्बरवन जाने वाली आत्मायें हो ना।

प्रश्न:-वन नम्बर का अर्थ क्या है?
उत्तर:-
⚡हर बात में विन करने वाली।
⚡कोई भी कमी नहीं।

प्रश्न:-टीचर्स का अर्थ क्या है?
उत्तर:-
सदा अपनी मूर्त द्वारा कर्मातीत ब्रह्मा बाप और
न्यारे तथा प्यारे शिव बाप की अनुभूति कराने वाले। तो यह विशेषता है ना।

प्रश्न:-फ्रेंड्स हो ना आप! फ्रेंड्स कैसे बनते हैं?
उत्तर:-बिना समान के फ्रेंड्स नहीं बन सकते।

प्रश्न:-तो आप सब बाप के कौन-से और कैसे फैन्डस हो ?
उत्तर:-
गाडली फ्रेंड्स हो। समान होना ही फैन्डशिप है।
बाप के कदम पर कदम रखने वाले।

प्रश्न:- क्योंकि फ्रेंड्स भी हो और क्या हो?
उत्तर:-फिर माशूक के आशिक भी हो। तो आशिक सदा माशूक के पांव के ऊपर पांव रखते हैं। यह रसम है ना।

प्रश्न:-जब शादी होती है तो क्या कराते हैं?
उत्तर:-यही कराते हैं ना।

प्रश्न:-तो यह सिस्टम भी कहाँ से बनी?
उत्तर:-आप लोगों से बनी है।

प्रश्न:-आपका है बुद्धि रूपी पांव और उन्होंने क्या समझ लिया है?
उत्तर:-स्थूल पांव समझ लिया है।

प्रश्न:-हर सम्बन्ध से विशेषता का सम्बन्ध निभाने वाली कौन हो?
उत्तर:-निमित्त आत्मायें हो।

प्रश्न:-निमित्त शिक्षकों को औरों से बहुत सहज साधन हैं। दूसरों को तो फिर भी सम्बन्ध में रहना पड़ता है और आपका सम्बन्ध किससे है?
उत्तर:-सदा सेवा और बाप से है। चाहे लौकिक कार्य भी करते हो तो भी सदा यही याद रहता है कि टाइम हो और सेवा पर जाएं। और

प्रश्न:-लौकिक कार्य जिसके लिए किया जाता है उसकी क्या आती है?
उत्तर:-स्मृति स्वत: आती है। जैसे लौकिक में माँ-बाप कमाते हैं बच्चे के लिए। तो उनकी स्वत: याद आती है।

प्रश्न:-तो आप भी जिस समय लौकिक कार्य करते हो तो किसके प्रति करते हो?
प्रश्न:-सेवा के लिए करते हो - या अपने लिए?

प्रश्न:-क्योंकि जितना सेवा में लगाते तो क्या होता है?
उत्तर:-उतनी खुशी होती है।

प्रश्न:-सेवा का तरीका क्या है?
उत्तर:-कभी भी सेवा को लौकिक सेवा समझकर नहीं करो। यह भी एक सेवा का तरीका है, रूप भिन्न है लेकिन है सेवा के प्रति।

प्रश्न:-नहीं तो देखो, क्या देखो?
उत्तर:-अगर लौकिक सेवा करके सेवा का साधन नहीं होता तो संकल्प चलता है।

प्रश्न:-कौन-सा संकल्प चलता है?
उत्तर:-
- ? कि कहां से आवे!
- ? कैसे आवे! चलता नहीं है।
- ? पता नहीं कब होगा?
- ? यह संकल्प व्यर्थ समय नहीं गँवाता?

प्रश्न:-इसलिए कौन-सा शब्द नहीं बोलो?
उत्तर:-कभी भी लौकिक जॉब (धन्धा) करते हैं, यह शब्द नहीं बोलो।

प्रश्न:- क्या समझने से बोझ नहीं लगेगा और भारी कब होते हो?
उत्तर:-यह अलौकिक जॉब है। सेवा निमित्त है। तो कभी भी बोझ नहीं लगेगा। नहीं तो कभी-कभी भारी हो जाते हैं, कब तक होगा, क्या होगा!

प्रश्न:-आप लोगों के लिए प्रालब्ध बहुत सहज बनाने का साधन क्या है?
उत्तर:-तन-मन-धन तीन चीज़ें हैं ना!

प्रश्न:-अगर तीनों ही चीज़ें सेवा में लगाते हैं तो तीनों का फल किसको मिलेगा?
उत्तर:- आपको मिलेगा या बाप को!

प्रश्न:-तीनों ही रीति से अपनी प्रालब्ध बनाना तो यह औरों से क्या हो जाएगा?
उत्तर:-औरों से एडीशन प्रालब्ध हो गई। इसलिए कभी भी इसमें भारी नहीं।

प्रश्न:-सिर्फ क्या करो?
उत्तर:-भाव को बदली करो।

प्रश्न:- कौन-से भाव को बदली करो?
उत्तर:-लौकिक नहीं अलौकिक सेवा के प्रति ही है। इसी भाव को बदली करो।

प्रश्न:-समझा - यह तो और ही डबल सरेन्डर हो कैसे?
उत्तर:-धन से ही सरेन्डर हो गये। सब बाप के प्रति है।

प्रश्न:-सरेन्डर का अर्थ क्या है?
उत्तर:-जो कुछ है बाप के प्रति है अर्थात् सेवा के प्रति है। यही है सरेन्डर का अर्थ।

प्रश्न:-जो समझते हैं हम सरेन्डर नहीं हैं, वह क्या करो?
उत्तर:-वह हाथ उठाओ। उनकी सेरिमनी मना लेंगे! बाल बच्चे भी पैदा हो गये और कहते हो सरेन्डर नहीं हुए!

प्रश्न:-अपना मैरेज डे भले मनाओ लेकिन क्या नही कहो?
उत्तर:-मैरेज हुई नहीं यह तो नहीं कहो। क्या समझते हो? सारा ही ग्रुप सरेन्डर ग्रुप है ना!

प्रश्न:-बापदादा तो डबल विदेशी वा डबल विदेश के स्थान पर निमित्त बनी हुई टीचर्स की क्या करते हैं?
उत्तर:-बहुत महिमा करते हैं। ऐसे ही नहीं महिमा करते हैं लेकिन मुहब्बत से विशेष मेहनत भी करते हो।

प्रश्न:-मेहनत तो बहुत करनी पड़ती है लेकिन मुहब्बत से क्या नही महसूस होती?
उत्तर:-मेहनत महसूस नहीं होती।

प्रश्न:-देखो, कितने दूर-दूर से ग्रुप तैयार करके लाते हैं तो बापदादा क्या करते हैं?
उत्तर:- बच्चों की मेहनत पर बलिहार जाते हैं।

प्रश्न:-एक विशेषता डबल फारेन के निमित्त सेवाधारियों की बहुत अच्छी है। जानते हो कौन-सी विशेषता है?
उत्तर:-(अनेक विशेषतायें निकली) जो भी बातें निकाली वह स्वयं में चेक करके कम हो तो भर लेना। क्योंकि बातें तो बहुत अच्छी-अच्छी निकाली हैं।

प्रश्न:-बापदादा ने डबल विदेशी सेवाधारियों में कौन-सी एक विशेषता देखी?
उत्तर:- जो बापदादा डायरेक्शन देते हैं - यह करके लाना, वह प्रैक्टिकल में लाने के लिए हमेशा कितना भी प्रयत्न करना पड़े लेकिन प्रैक्टिकल में लाना ही है, यह लक्ष्य प्रैक्टिकल अच्छा है।

प्रश्न:-जैसे बापदादा ने क्या कहा?
उत्तर:- कि ग्रुप लाने हैं तो ग्रुप्स भी ला रहे हैं।

प्रश्न:-बापदादा ने कहा, क्या कहा?
उत्तर:-वी.आई.पीज की सर्विस करनी है।

प्रश्न:-पहले क्या कहते थे?
उत्तर:-कितना मुश्किल कहते थे, बहुत मुश्किल।

प्रश्न:-लेकिन हिम्मत रखी, करना ही है तो क्या हुआ?
उत्तर:-तो अभी देखो 2 साल से ग्रुप्स आ रहे हैं ना।

प्रश्न:-कहते थे, क्या कहते थे?
उत्तर:-लण्डन से वी.आई.पी. आना बहुत मुश्किल है। लेकिन अभी देखो प्रत्यक्ष प्रमाण दिखाया ना।

प्रश्न:-इस बारी तो भारत वालों ने भी किया?
उत्तर:- राष्ट्रपति को लाकर दिखाया।

प्रश्न:-डबल विदेशियों की कौन-सी लगन अच्छी है?
उत्तर:-डायरेक्शन मिला और करना ही है यह लगन अच्छी है।

प्रश्न:-प्रैक्टिकल रिजल्ट देख बापदादा क्या करते हैं?
उत्तर:-विशेषता का गायन करते हैं। सेन्टर खोलते हो वह तो पुरानी बात हो गई।

प्रश्न:-वह तो खोलते ही रहेंगे, क्यों?
उत्तर:-क्योंकि वहाँ साधन बहुत सहज हैं। यहां से वहां जा करके खोल सकते हो।

प्रश्न:-यह भारत में साधन नहीं है। इसलिए सेन्टर खोलना कोई बड़ी बात नहीं लेकिन क्या तैयार करना है?
उत्तर:-अच्छे-अच्छे वारिस क्वालिटी तैयार करना। एक है वारिस क्वालिटी तैयार करना और दूसरा है बुलन्द आवाज़ वाले तैयार करना। दोनों ही आवश्यक हैं।

प्रश्न:-वारिस क्वालिटी किसे कहते हैं?
उत्तर:-वारिस क्वालिटी जो आप जैसे ही सेवा के उमंग-उत्साह में तन-मन-धन सहित रहते हुए भी सरेन्डर बुद्धि हो, इसको कहते हैं - वारिस क्वालिटी।

प्रश्न:-किस बात के ऊपर विशेष अटेन्शन रखना है?
उत्तर:- वारिस क्वालिटी भी निकालनी है। इसके ऊपर भी विशेष अटेन्शन।

प्रश्न:-सेवाकेन्द्र नम्बर बन में कब जाता है?
उत्तर:-वारिस क्वालिटी हों तो सेवाकेन्द्र सबसे नम्बरवन में जाता है। एक है सेवा में सहयोगी होना, दूसरे हैं पूरा ही सरेन्डर होना। ऐसे वारिस कितने हैं? हरेक सेवाकेन्द्र पर ऐसे वारिस हैं।

प्रश्न:-गाडली स्टूडेन्ट बनाना, सेवा में सहयोगी बनना वह लिस्ट तो लम्बी होती है लेकिन क्या?
उत्तर:-वारिस कोई-कोई होते हैं। जिसको जिस समय जो डायरेक्शन मिले, जो श्रीमत मिले उसी प्रमाण चलता रहे। तो दोनों ही लक्ष्य रखो, वह भी बनाना है और वह भी बनाना है।

प्रश्न:- वारिस क्वालिटी वाला किस बात के निमित्त बन सकता है?
उत्तर:-एक अनेक सेन्टर खोलने के निमित्त बन सकता है। यह भी लक्ष्य से प्रैक्टिकल होता रहेगा। विशेषता तो अपनी समझी ना। अच्छा-

प्रश्न:-सन्तुष्ट तो हैं ही - या पूछना पड़े। है ही सन्तुष्ट करने वाले। तो जो सन्तुष्ट करने वाला होगा वह क्या होगा?
उत्तर:-वह स्वयं तो होगा ना।

👉 कभी सर्विस थोड़ी कम देख करके हलचल में तो नहीं आते हो?

👉 कोई सेवाकेन्द्र पर विघ्न आता है तो विघ्न में घबराते हो?

👉 समझो बड़े ते बड़ा विघ्न आ गया - कोई अच्छा अनन्य एन्टी हो जाता है और डिस्टर्ब करता है आपकी सेवा में तो फिर घबरायेंगे?

प्रश्न:-हलचल में आना किसको कहते हैं?
उत्तर:-एक होता है उसके प्रति कल्याण के भाव से तरस रखना वह दूसरी बात है लेकिन

📍 स्वयं की स्थिति नीचे-ऊपर हो या

📍 व्यर्थ संकल्प चले

👉 इसको कहते हैं हलचल में आना।

प्रश्न:-अचल अडोल स्थिति किसको कहते हैं?
उत्तर:-

संकल्प की सृष्टि भी नहीं रचें।

संकल्प भी हिला न सकें!

इसको कहते हैं - अचल अडोल स्थिति।

प्रश्न:-ऐसे भी नहीं, कैसे?
उत्तर:-कि अलबेले हो जाएँ कि नथिंगन्यू। सेवा भी करें, उसके प्रति रहमदिल भी बनें लेकिन हलचल में नहीं आयें। तो न अलबेले, न फीलिंग में आने वाले। दोनों ही हैं।

प्रश्न:- सदा ही किसी भी वातावरण में, वायुमण्डल में हो लेकिन कैसे रहो?
उत्तर:- अचल अडोल। कभी कोई निमित्त बने हुए राय देते हैं, उनमें कनफ्यूज होते हो? यह क्यों कहते या यह कैसे होगा!

प्रश्न:-कभी-कभी कौन-सा वायब्रेशन आता है?
उत्तर:-थोड़ा-सा कनफ्यूज होने का वायब्रेशन आता है। क्योंकि जो निमित्त बने हुए हैं वह अनुभवी हो चुके हैं।

प्रश्न:-कनफ्यूज क्यों हो जाते हैं?
उत्तर:-जो प्रैक्टिकल में चलने वाले हैं - कोई नये हैं, कोई थोड़े पुराने भी हैं लेकिन जिस समय जो बात उसके सामने आती है, तो बात के कारण इतनी क्लीयर बुद्धि आदि मध्य अन्त को नहीं जान सकती है। सिर्फ वर्तमान को जान सकती है। इसलिए सिर्फ वर्तमान देख करके, आदि मध्य उस समय क्लीयर नहीं होता तो कनफ्यूज हो जाते हैं।

प्रश्न:-कभी भी कोई डायरेक्शन अगर नहीं भी स्पष्ट हो तो क्या नहीं होना?
उत्तर:-कनफ्यूज कभी नहीं होना। धैर्य से कहो इसको समझने की कोशिश करेंगे। थोड़ा टाइम दो उसको।

प्रश्न:-उसी समय कनफ्यूज होकर यह नहीं, वह नहीं, ऐसे नहीं करो। क्यों?
उत्तर:-क्योंकि डबल विदेशी फ्री माइंड ज्यादा हैं इसलिए न भी फ्री माइंड से कह देते हैं।

प्रश्न:-इसलिए थोड़ा-सा जो भी बात मिलती है - उसको कैसे सोचो?
उत्तर:-गम्भीरता से पहले सोचो, उसमें कोई न कोई रहस्य अवश्य छिपा होता है। उससे पूछ सकते हो - इसका रहस्य क्या है? इससे क्या फायदा होगा? हमें और स्पष्ट समझाओ। यह कह सकते हो।

प्रश्न:-लेकिन कभी भी डायरेक्शन को क्या नही करो?
उत्तर:-रिफ्यूज नहीं करो।

प्रश्न:-रिफ्यूज करते हो इसलिए क्या होते हो?
उत्तर:- कनफ्यूज होते हो। यह थोड़ा विशेष अटेन्शन डबल विदेशी बच्चों को देते हैं।

प्रश्न:-नहीं तो क्या होगा?
उत्तर:-जैसे आप निमित्त बने हुए, बहनों के डायरेक्शन को जानने का प्रयत्न नहीं करेंगे और हलचल में आ जायेंगे तो आपको देखकर जिन्हों के निमित्त आप बने हो, उन्हों में यह संस्कार भर जायेंगे।

प्रश्न:- फिर क्या होगा?
उत्तर:-कभी कोई रूसेगा, कभी कोई रूसेगा। फिर सेन्टर पर यही खेल चलेगा। समझा!

वरदान:-ज्ञान और योग की शक्ति से हर परिस्थिति को सेकण्ड में पास करने वाले महावीर भव

👉 महावीर अर्थात् सदा लाइट और माइट हाउस। ज्ञान है लाइट और योग है माइट।

📍 जो इन दोनों शक्तियों से सम्पन्न हैं वह हर परिस्थिति को सेकण्ड में पास कर लेते हैं।

📍 अगर समय पर पास न होने के संस्कार पड़ जाते हैं तो फाइनल में भी वह संस्कार फुल पास होने नहीं देते।

👉 जो समय पर फुल पास होता है उसको कहते हैं पास विद ऑनर। धर्मराज भी उसको ऑनर देता है।

स्लोगन:-योग अग्नि से विकारों के बीज को भस्म कर दो तो समय पर धोखा मिल नहीं सकता।

🙏ओम शांति🙏